भारतीय राजनीति में दलीय व्यवस्था का विकास

डॉ. मो. जोहा सिद्दीकी*

सार–संक्षेप–भारतीय दल प्रणाली की एक प्रमुख विशेषता यह है कि अधिकांश राजनीतिक दल अपने अस्तित्व व सफलता के लिए सिद्धान्तों नीतियों और कार्यक्रमों पर निर्भर न होकर किसी व्यक्ति विशेष के चमत्कारिक नेतृत्व व व्यक्तित्व पर निर्भर करते है। कांग्रेस की राजनीति लम्बे समय तक पं. नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गांधी व राजीव गांधी के व्यक्तित्व के इर्द गिर्द घूमती रही और आज भी राष्ट्रीय आन्दोलन का संचालन और सम्पूर्ण भारत में अपना जनाधार रखने वाला यह एक मात्र दल नेतृत्व अस्तित्व व भविष्य के लिए गांधी नेहरू परिवार पर ही निर्भर है। स्वतंत्रता के बाद 1978 में इस दल में होने वाले विभाजन व्यक्तित्व और अहम के टकराव के परिणाम थे। तमिल मनिला कांग्रेस, शरद पवार के नेतृत्व, वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और तृणमूल कांग्रेस के गठन का भी संभवतः यही कारण था। बहुत से छोटे और क्षेत्रीय दल तो नेतृत्व विशेष के व्यक्तित्व से न केवल संचालित होते है बल्कि इनके निजी संगठन के रूप में परिलक्षित होते है। बिहार में राष्ट्रीय जनता दल लालू प्रसाद यादव, उ.प्र. में बहुजन समाज पार्टी मायावती, समांजवादी पार्टी मुलायम सिंह यादव, तमिलनाडु में द्रमुक एम करूणानिधि, आल इन्डिया द्रमुक जयललिता महाराष्ट्र में शिवसेना के उद्धव ठाकरे, आन्ध्र प्रदेश में तेलगुदेशम पार्टी चन्द्र बाबू नायडू, असम में असम गणपरिषद प्रफुल्ल कुमार महंत जैसे व्यक्तियों के व्यक्तित्व एवं शक्ति पर टिका हुआ है। इस व्यक्तिवादी राजनीति का दुष्परिणाम यह हुआ है कि भारत में राजनीतिक दलों के महत्वपूर्ण निर्णय और कार्य लोकतांत्रिक प्रणाली से न तय करके नेतृत्व की इच्छा पर छोड़ देने की परम्परा विकसित होती जा रही है जो कि लोकतांत्रिक मूल्यों के लिये धातक है। राजनीतिक दलों के क्रियान्वयन में शीर्ष की भूमिका महत्वपूर्ण होती है और सतह के कार्यकर्त्ताओं की स्थिति मात्र शीर्ष द्वारा निर्देशित पात्रों की ही रह जाती है।

परिचय–आधुनिक लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका अति महत्वपूर्ण हो गई है। यदि यह कहा जाये कि राजनीतिक दल आज लोकतंत्रीय व्यवस्था का संचालन करने वाले महत्वपूर्ण तंत्र बन गये है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। विशेष रूप से जहाँ संसदीय शासन हो वहाँ राजनीतिक दल राजनीतिक व्यवस्था

***सहायक प्राध्यापक (अतिथि) राजनीति विज्ञान विभाग मिल्लत कॉलेज, दरभंगा**

के जीवन सूत्र के रूप में ही कार्य करते है। आज राजनीतिक दल राजनीतिक संस्था और प्रशासन के महत्वपूर्ण अंग का रूप धारण कर चुके है यही कारण है कि किसी भी देश में शासन प्रणाली का रूप चाहे जो भी हो राजनीतिक दल अनिवार्य रूप से विकसित होते है संयुक्त राज्य अमेरिका जहाँ के संविधान निर्माताओं ने राजनीतिक दलों को कभी भी पसन्द नहीं किया वहाँ भी राजनीतिक दलों का विकास हुआ। सर्वाधिकारवादी व अधिनायकवादी राज्यों में भी राजनीतिक दलों का अस्तित्व देखने को मिलता है।

भारत में भी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के जननायक भारत के राष्ट्रपिता कहे जाने वाले महात्मा गांधी व प्रख्यात समाजवादी चिन्तक व राजनेता लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने भारत के लिए ''दलविहीन लोकतंत्र'' की परिकल्पना की थी। गांधी जी की हार्दिक इच्छा थी कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कांग्रेस अपने दलीय स्वरूप को विघाटित कर लोक सेवक संघ के रूप में कार्य करें। भारतीय संविधान में भी कहीं पर राजनीतिक दल शब्द का उल्लेख नहीं आया है फिर भी अमेरिकी राजनीति की तरह भारतीय राजनीति में भी राजनीतिक दलों का विकास हुआ और भारत की संसदीय राजनीतिक ने बहुदलीय राजनीतिक व्यवस्था का आकार ग्रहण किया। भारत में राजनीतिक दलों के विकास को हम दो भागों में बांट सकते हैं–

1. स्वतन्त्रता पूर्व राजनीतिक दलों का विकास
2. स्वतन्त्रता के पश्चात् राजनीतिक दलों का विकास

स्वतन्त्रता पूर्व राजनीतिक दलों का विकास–भारत में संगठित रूप राजनीतिक दलों का विकास वस्तुतः 1885 ई. में कांग्रेस की स्थापना से प्रारम्भ होता है। इसकी स्थापना एक राजनीतिक दल के रूप में नहीं बल्कि एक ऐसे संगठन के रूप में हुई थी जिसका उद्देश्य मूलतः भारतीयों के गैर सरकारी संसद के रूप में कार्य करना था। प्रारम्भ में इसे ब्रिटिश शासकों का समर्थन प्राप्त था, किन्तु कुछ दिनों बाद ही कांग्रेस द्वारा साम्राज्यवाद की आलोचना तथा स्वराज्य की मांग ने ब्रिटिश शासकों के कांग्रेस के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन ला दिया। उन्होंने यह अनुभव किया कि यह संस्था ब्रिटिश नौकरशाही तथा साम्राज्य के विरूद्ध है। अतः उन्होंने इस संस्था के विरूद्ध भारतीय जनता की दूसरी संस्था की स्थापना को प्रोत्साहन देना उचित समझा। इस कड़ी में सर सैयद अहमद खां के नेतृत्व में मुस्लिम समुदाय की एक राजनीतिक संस्था ''अखिल भारतीय मुस्लिम लीग'' 1906 ई. में स्थापित की गई। इसे विशुद्व रूप में एक राजनीतिक दल कहना गलत होगा क्योंकि यह एक साम्प्रदायिक संस्था थी जिसकी सदस्यता केवल मुस्लिम समुदाय तक ही सीमीत थी। प्रारम्भ में इसका उद्देश्य भारतीय मुसलमानों में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति राजभक्ति पैदा करना तथा उनके राजनीतिक अधिकारों एवं हितों की रक्षा करना था। बाद में कांग्रेस की ही भांति इस संगठन ने भी भारत की स्वतंत्रता का

नारा बुलन्द किया। लेकिन साथ ही साथ मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए एक अलग राष्ट्र की मांग भी उठाना प्रारम्भ कर दिया। 1937 में लीग के नेता मुहम्मद अली जिन्ना ने कहा कि मुस्लिम लीग का उद्देश्य पूर्ण प्रजातांत्रिक स्वायत्त सरकार की प्राप्ति है। किन्तु ''द्विराष्ट्रसिद्वान्त'' और कांग्रेस के प्रति लगातार विरोधी दृष्टिकोण के कारण इसे 1941 में अपने संविधान मे परिवर्तन करना पड़ा उसी वर्ष का विख्यात'' पाकिस्तान प्रस्ताव अन्ततः पाकिस्तान निर्माण के लिए उत्तरदायी सिद्ध हुआ।

मुस्लिम लीग की स्थापना की प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप 1916 में हिन्दुओं की एक साम्प्रदायिक संस्था का जन्म ''हिन्दू महासभा'' के रूप में हुआ। इस दल के उद्देश्य ''पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति तथा हिन्दू राज की स्थापना करना था। यह कांग्रेस की अहिंसा की नीति के विरूद्ध था। इसके अध्यक्ष सावरकर का कहना था कि हिन्दू महासभा का उद्देश्य हिन्दू जाति, हिन्दू संस्कृति तथा हिन्दू सभ्यता की देखभाल, रक्षा, विकास और हिन्दू राष्ट्र के गौरव में वृद्धि और पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति है।

1920 में एक नये दल–उदार दल की स्थापना हुई। इस दल का उद्देश्य संवैधानिक पद्धति के माध्यम से लक्ष्य की प्राप्ति करना था। इसने 1919 के अधिनियम के आधार पर हुए निर्वाचन में भाग लिया। किन्तु यह दल प्रायः महत्वहीन ही बना रहा।

इन दलों के अतिरिक्त स्वतंत्रता पुर्व भारत में अनेक वामपंथी दलों की भी स्थापना हुई। 1917 में रूस में साम्यवादी क्रान्ति ने भारत के क्रान्तिकारियों को प्रभावित किया। वे सोवियत रूस के नेताओं से सम्पर्क का प्रयास करते रहे। 1919 में महेन्द्र प्रताप के नेतृत्व में भारतीयों के पहले प्रतिनिधिमंडल ने लेनिन के साथ मास्कों में मुलाकात की। लेनिन ने इस भेंट को बहुत महत्व दिया। 17 अक्टूबर 1920 को ताशकंद में भारत के कम्युनिष्ट पार्टी की स्थापना हुई। भारत में सितम्बर 1924 को कानपुर में भारतीय साम्यवादी दल के स्थापना की घोषणा की गई।

कांग्रेस नेतृत्व की दक्षिण पंथी कार्यवाही और गांधी के नेतृत्व के विरूद्व प्रतिक्रिया स्वरूप कांग्रेस के प्रगतिशील समाजवादी विचारधारा से जुड़े लोगों ने 1934 में पटना में कांग्रेस महासमिति की बैठक के समय ही अखिल भारतीय कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना की। इस संगठन में सक्रिय रूप से जुडे लोग थे–जयप्रकाश नारायण, अशोक मेहता, आचार्य नरेन्द्र देव, अच्युत पटवर्धन और डा. राम मनोहर लोहिया आदि।

इसी प्रकार जिन अन्य वामपंथी दलों की स्थापना हुई उनमें प्रमुख थे–भारतीय क्रान्तिकारी साम्यवादी दल 1942, क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी 1940, भारतीय बोल्शेविक पार्टी 1939, बोल्शेविक लेनिनिस्ट पार्टी 1941, फारवर्ड

ब्लाक 1937, सोशलिस्ट पार्टी 1934 आदि। इस प्रकार स्वतंत्रता से पूर्व भारत में अनेक राजनीतिक दलों का उदय हुआ किन्तु सिर्फ वे ही दल अपना अस्तित्व बचा पाये जो स्पष्ट सिद्वान्तों एवं नीतियों पर आधारित थे।

स्वतंत्रता के पश्चात राजनीतिक दलों का विकास–स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में दलीय व्यवस्था ने ठोस संस्थात्मक आकार लेना प्रारम्भ किया। इस समय देश में राष्ट्रीय स्तर पर दो दल थे–भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा साम्यवादी दल। कांग्रेस ने राष्ट्रीय पुनर्जागरण और स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। यथार्थ में स्वतंत्रता से पूर्व कांग्रेस का स्वरूप इतना विशाल था कि यह दल नहीं अपितु राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में एक मंच था। साम्यवादी दल का प्रभाव सीमित था। इसके अतिरिक्त दक्षिण में द्रविड़ कड़गम तथा उत्तर में हिन्दू महासभा जैसे दल विद्यमान थे। स्वतंत्रता के बाद अन्य राजनीतिक दलों का भी उदय हुआ। 1948 में राम राज्य परिषद की स्थापना हुई। 1949 में द्रविड़ मुनेत्र कड़गम का उदय हुआ जो द्रविड कड़गम से अलग हुए कुछ व्यक्तियों द्वारा गठित किया गया था। 1950 में जय प्रकाश नारायण ने भारतीय समाजवादी दल की और आचार्य कृपलानी ने किसान मजदूर प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की। 1951 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई।

1969 में स्वतंत्रता पश्चात कांग्रेस का पहला विभाजन हुआ। कांग्रेस नई कांग्रेस (श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में) व संगठन कांग्रेस में विभक्त हो गई। 1971 में लोकसभा चुनावों में श्रीमती गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस को परास्त करने के लिए स्वतंत्र पार्टी, जनसंघ, सोशलिस्ट पार्टी और संगठन कांग्रेस ने महागठबंधन का निर्माण किया। किन्तु यह महा गठबंधन चुनावों में परास्त हुआ और नई कांग्रेस को लोकसभा में दो तिहाई बहुमत प्राप्त हुआ। 1972 में सोशलिस्ट पार्टी व प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का पुनः विलय हो गया जिसके परिणामस्वरूप एक नया दल अस्तित्व में आया–सोशलिस्ट पार्टी आफ इन्डिया। किन्तु कुछ समय बाद इसमें पुनः फूट पड़ गई और उनके समर्थकों ने दिसम्बर 1972 को लखनऊ में पुरानी सयुंक्त सोशलिस्ट पार्टी को पुनर्जीवित किया। जनसंघ भी विधटित होने से नहीं बच सका। जनसंघ से निष्कासित होने के बाद इसके वरिष्ठ नेता बलराज मधोक ने अप्रैल 1973 में राष्ट्रीय लोकतात्रिक मोर्चा नामक एक नये दल का गठन किया।

1974 में भारतीय क्रान्ति दल, स्वतंत्र पार्टी, उत्कल कांग्रेस, किसान मजदूर पार्टी, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी और पंजाब खेतीबाड़ी जमींदार यूनियन जैसे दलों ने अपने अस्तित्व को एक में विलीन करते हुए भारतीय लोकदल का गठन किया। चौधरी चरण सिंह इस दल के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

जुलाई 1979 में जनता पार्टी विभाजित हो गई। राजनारायण ने जनता (सेक्युलर) के नाम से एक नये दल का गठन किया। 15 जुलाई 1979 को मोरारजी

सरकार का पतन हो गया। चौ. चरण सिंह प्रधानमंत्री बने किन्तु लोकसभा में शक्ति परीक्षण से पूर्व ही उन्होंने त्याग पत्र दे दिया। 26 सितम्बर 1979 को जनता सोशलिस्ट पार्टी तथा उड़ीसा की जनता पार्टी ने मिलकर एक नये दल लोकदल का गठन किया। चौधरी चरण सिंह इसके अध्यक्ष और राज नारायण इसके कार्यकारी अध्यक्ष बने। इस बीच कांग्रेस भी अविभाजित न रह सकी। इन्दिरा समर्थकों और विरोधियों के मध्य अनवरत रूप से चलने वाले सत्ता संधर्ष के कारण 2 जनवरी 1978 को कांग्रेस का पुनः विभाजन हो गया और दो कांग्रेस पार्टियॉ अस्तित्व में आई इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस (ई) और ब्रह्मानन्द रेड्डी की अध्यक्षता वाली कांग्रेस। इन्दिरा कांग्रेस का प्रभाव बढ़ता रहा और 1980 के चुनावों में उसे दो तिहाई बहुमत से विजय मिली।

1980 के चुनावों के बाद जनता पार्टी की हार के बाद से इसके विघटन की प्रक्रिया निरन्तर चलती रही। इसके विभिन्न घटक अलग होते गये और अपना पृथक अस्तित्व कायम कर लिया। 6 अप्रैल 1980 को जनसंघ घटक ने भारतीय जनता पार्टी के नाम से एक नये दल का गठन किया। जगजीवन राम ने कांग्रेस नाम से एक नये दल का गठन किया।

1987 के बाद कांग्रेस (ई) का सशक्त विकल्प तैयार करने के प्रयत्न पुनः प्रारम्भ हुए। इस बार सूत्रधार की भूमिका में थे हरियाणा के चौधरी देवीलाल। इस दिशा में पहला कार्य यह किया गया कि जनता पार्टी लोकदल (अ) और संजय विचार मंच का एक में विलय कर दिया गया। इसी बीच विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस (ई) छोड़कर ''जनमोर्चा की स्थापना की। बाद मे देवीलाल के प्रयासों से उनके पूर्वास्त संगठन में जनमोर्चा और कांग्रेस (एस) का भी विलय हो गया और एक नया दल ''जनता दल'' के नाम से अस्तित्व में आया। विश्वनाथ प्रताप सिंह को जनता दल का प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। यह प्रयास यही नहीं समाप्त होता है। यह वह समय है जब क्षेत्रीय दलों को भी साथ लेकर चलने की आवश्यकता महसूस की गई। 17 सितम्बर 1988 को जनता दल, द्रमुक, असमगण परिषद्, तेलगूदेशम आदि ने मिलकर राष्ट्रीय मोर्चे का गठन किया। आन्ध्र प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री एन.टी. रामाराव को इस मोर्चे की अध्यक्ष और वी.पी. सिंह को इसका संयोजक बनाया गया। 1989 के चुनावों में कांग्रेस को बहुमुत नहीं मिला और न ही इस राष्ट्रीय मोर्चे को ही बहुमत मिला। फिर भी भाजपा और वामपंथी दलों के समर्थन से वी.पी. सिंह के नेतृत्व में गठबंधन सरकार बनी। 1990 में भाजपा द्वारा समर्थन वापस ले लेने पर इस सरकार का पतन हो गया।

1979 में जनता पार्टी के पतन के बाद जिस तरह उसका विघटन प्रारम्भ हुआ उसी प्रकार जनता दल में भी विखंडन प्रारम्भ हो गया। जनता दल ही नहीं बल्कि 1990 में बाद से अधिकांश राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों में छोटे बड़े विभाजन

हुए और नये दल अस्तित्व में आये। सत्तागत स्वार्थ, निजी महात्वाकांक्षा, व्यक्तित्व के टकराव अथवा नेतृत्व की निरंकुशता के कारण बनने वाले इन गुटीय दलों के कारण भारतीय राजनीति में दलों का दलदल सा बन गया।

इन दलों के अतिरिक्त समय–समय पर क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय मांगों आवश्यकताओं समस्याओं एवं आकांक्षाओं के अनुरूप अनेक क्षेत्रीय दलों का भी गठन हुआ जिनका प्रभाव राज्य विशेष तक सीमित रहा। किन्तु इस सीमित क्षेत्रीय प्रभाव ने भारतीय राजनीति और राजनीतिक व्यवस्था के क्रियान्वयन को असीमित रूप से प्रभावित किया। इन दलों में बिहार में लालू प्रसाद के नेतृत्व वाला, राष्ट्रीय जनता दल और समता पार्टी, उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी, असम गण परिषद, पंजाब में अकाली दल, हरियाणा में हरियाणा विकास पार्टी और लोकदल, महाराष्ट्र में शिवसेना, आन्ध्रप्रदेश में तेलगू देशम पार्टी, तमिलनाडु में द्रविड़ मुनेत्र कड़गम और आंल इन्डिया द्रविड़ मुनेत्र कड़गम, जम्मू कश्मीर में नेशनल कान्फ्रेन्स आदि महत्वपूर्ण भूमिका रहे है।

निष्कर्ष–पिछले कुछ वर्षों के भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर नजर डालने पर पाया गया कि अधिकांश राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दल विभाजन का शिकार हुआ है। विभाजन के फलस्वरूप जिन राजनीतिक दलों का निर्माण हुआ है उन सब का उल्लेख कर पाना कठिन है फिर भी कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण उल्लेखनीय है। कांग्रेस के विभाजन से जो दल अस्तित्व में आये वे है राष्ट्रीय कांग्रेस, लोकतांत्रिक कांग्रेस, तमिल मानीला कांग्रेस व तृणमूल कांग्रेस आदि। भाजपा का विभाजन कर शंकर सिंह वाधला ने गुजरात में अलग पार्टी बनाई और कल्याण सिंह ने उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी का गठन किया। बहुजन समाज पार्टी से अलग हुए गुटो ने जनतांत्रिक बहुजन समाज पार्टी, किसान मजदूर बहुजन समाज पार्टी और अपना दल जैसे दलों का गठन किया। जनता दल से बिखरे हुए समता पार्टी, जनता दल (यूनाइटेड), जनता दल (सेक्यूलर), समाजवादी जनता पार्टी, लोक जनशक्ति पार्टी व राष्ट्रीय जनता दल के रूप में भारतीय राजनीतिक आकाश में विधमान है।

संदर्भ स्रोतः–

1. नील. ए. मैकडानल्ड, ''पार्टी पर्सपेक्टिव : कम्पेरेटिव पोलिटिक्स'' (सम्पा0) 1963, पृ0 335
2. थामस मैरी, ''पोलिटकल पार्टीज इन इण्डिया'' लिबरल टाइम्स, वाल्यू, IX नं0 1, 2001, पृ0 17
3. अयोध्या सिंह, इन्डिया स्ट्गल, मैकमिलेन, 1977, पृ0 475
4. निखिल चक्रवर्ती, ''गठबंधन की राजनीति से बचना मुश्किल'', दैनिक जागरण 8–12–1997
5. एच.डी.शूरी, ''बेसिक फंक्शनिंग ऑफ पोलिटिकल पार्टीज इन इण्डिया, लिबरल टाइम्स, IX वाल्यूम नं0 1, 2001